Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VI June 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

सम्बन्धों के विघटन का सैध्दान्तिक विवेचन

डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा
दयानंद वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

१.१ विघटन की प्रक्रिया:-

समाज का संगठन, सदस्यों के नियमबध्द सम्बन्धों और पारस्परिक अन्तर्कियाओं पर निर्भर करता है। जब इन सम्बन्धों में तनाव की स्थिती आ जाती है या पारस्परिक प्रभाव समाप्त हो जाता है या इस प्रकार की व्यवस्था उत्पन्न हो जाती है कि समाज में आसमंजस्य या पृथक्करण की स्थिति आ जाए तो समाज में संगठन के स्थान पर विघटन की स्थिती लक्षित होती है।

ईलियट और मेरील के अनुसार - **"विघटन का आशय किंन्ही भी उन सम्बन्धों की शिथिलता, असामन्जस्य या पृथक्करण है, जो समूह के सदस्यों को एक सुत्र में बांधे हुए है।"** [१] इसी के आधार पर कहा जाएगा कि, **"विघटन पति-पत्नी के मध्य तनावों तक ही सीमित नहीं बल्कि परिवार के किन्ही भी सदस्यों के मध्य के सम्बन्धों के टूट जाने से है।"** [२] अधिकांश विद्वानों का कथन है कि, **"पारिवारिक विघटन एक प्रकार से सामाजिक विघटन का ही रुप है।"** [३] भग्न परिवार समाज के बृहद् रुप को प्रभावित करते है। महानगरीय परिवारों में विघटन की शिथिलता और सदस्यों में पारिवारिक निष्ठा का अभाव पाया जाता है। विवाह विच्छेद, पृथक्करण, सम्बन्धों में तनाव, यौन असामंजस्य, प्रकृति में भिन्नता आदि बातें आम मिलती है।

"पारिवारिक विघटन समाज की संरचना में आ रहे परिवर्तनों से प्रभावित होता है।" [४] परिवार में पति-पत्नी की स्थिती और कार्यों में परिवर्तन, विघटन की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है। **"पारिवारिक तनाव पारिवारिक विघटन का महत्वपूर्ण कारण है।"** [५] ये तनाव पिता-पुत्र, पति-पत्नी, किसी भी सदस्यों के मध्य हो सकते है। पारिवारिक विघटन का सम्बंन्ध पति-पत्नी के मध्य निर्माण होनेवाले तनाव में है। कई बार व्यक्ती को लगता है कि, जिसको मैं मेरी पत्नी समझ रहा हूं वो मन से उसकी पत्नी नही है। कई प्रसंगो में वह उसकी दुश्मन लगती है। ऐसी परिस्थिती में परिवार का विघटन होना स्वाभाविक है। दया को अधिकार या कमजोरी समझना तनाव की सुरुवात है। पति-पत्नी के बीच कलह का कारण आर्थिक भी होता है। यौनिक तनाव भी पारिवारिक विघटन का कारण है। पति-पत्नी दोनों में कोई भी आशा के अनुरुप स्नेह प्रदान करने या प्रेम प्राप्त करने में असफल रहता है तो संन्देह की निर्मिती होकर एक दूसरे के प्रति अविश्वास की स्थिती उत्पन्न होती है। यौन रुचियाँ और अकृतिया की विषमता भी कभी-कभी असह्य हो जाती है। प्रेम-विवाह करनेवाले प्रत्यक्ष रुप से प्रेम प्राप्त करने में जब असफल रहते है तब तनाव की स्थिती निर्माण होती है। कभी अनैच्छिक विवाह रोमांटिक प्रेम और विवाहेत्तर यौन-सम्बन्ध, पारिवारिक क्रुरता, आर्थिक कारण, रुचियों में भिन्नता आदि ऐसे कारण है जो विघटन को जन्म देते है। कोई स्वभाव से ही लम्पट, दुराचारी,

दुि तिवाला हो, पत्नी ईर्ष्या भरी संकीर्ण मनोवृत्ती की हो तब तो विघटन निश्चित है। कुछ लोगों को गृहस्थी का आइडिया ही झूट लगता है। वे स्वीकृति परिपाटी को मानते नहीं। कुछ यह जानकर की परिवार में विघटन को स्थिती निर्माण होती है, परिवार के प्रति आस्था रखते है। कुटुम्ब व्यक्तिगत प्रेम से बडी वस्तु है। व्यक्तिगत प्रेम से समाज के बन्धन ढीले पड जायेंगे। कुटुम्ब की भावना नष्ट हो जाएगी। कुछ लोग बाहर भले ही कितनी उन्नती करे परन्तु घरेलू सुख चाहते है। बिना परिवार जीने की वह कल्पना नहीं कर सकते।

१.२ नारी -

आधुनिक युग में नारी की आम घरों में स्थिती बडी दयनीय है। रईसों और पण्डितों के घरों मे भी स्त्री जाति का दमन हो रहा है। तरह-तरह से उनका अपमान होता है। आज भी स्त्री घर का काम-काज,सब की सेवा टहल करनेवाली ओर पुरुष के भोग की वस्तु होने के अलावा कुछ नहीं। वह कहने को आधुनिका है परंन्तु आज भी उसे बच्चे पैदा करनेवाली मशीन समझा जाता है। फिर भी पुरुष निश्चित रुप से जानता है कि उसके बिना वह अधूरा है। आजादी के बाद नारी के प्रति दृष्टिकोण बदला है। नारी पुरुष के हाथ से बागडोर अपने हाथों पर लेकर शोषण से मुक्ति पाने के लिए कटिबध्द प्रतीत होती है। वह नारी समाज को आगे बढने का अह्वान करती है। आज वह घर की चार दीवारों को तोड डालना चाह रही है। आर्थिक क्षेत्र में पुरुष की बराबरी नारी कर रही है। कई नारियाँ समाज के सभी क्षेत्रों में अच्छे-अच्छे पदों पर कार्यरत है।, पंतप्रधान, लोकसभा अध्यक्ष से लेकर आकाश यान तक सभी जगह वह पहुंच गई है। वह बात आज इतिहास जमा हो गयी जिसमें पुरुष खून पसीना एक करता था और स्त्रियाँ घर में बैठकर श्रृंगार करती रही। आज दोनों कंधें से कंधा मिलाकर कार्यरत है। वह स्वावलम्बी बन चुकी है। वह पुरुष के लिए बोझ नहीं बनना चाहती। दिनभर लांछना और ताडना सहती वह पति की राह देखती नहीं।वह खुद कुछ करने का साहस लेकर निकलती है। नौकरी के प्रति नारी का दृष्टिकोण बिल ुल साफ है। नौकरी को वह प्रगति की पहली मंजिल मानती है। सरकारी नौकरी कर ने की ओर उनका झुकाव अधिक है। कुछ औरतों की तो सोच यह है कि, उनके पति नौकरी करने के कारण जैसी मनमानी करते थे, वैसी वह भी करें। उनमें अब साहस आ गया है। आज वह सभी व्यवसायों में कार्यरत है। नर्स, टीचर, डॉक्टर, पत्रकार, टेलीफोन ऑपरेटर, अभिनेत्री, सेना आदि जीवन के हर क्षेत्र में नारी कार्यरत है। नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदल गया है। नारी केवल सेक्स या भोग की वस्तु नही वह इसके अतिरिक्त भी और कुछ है। हमारे यहां नारी के गुणों की कदर नही होती। वह अच्छी टीचर है, नर्स है, समाज सेविका है, अच्छी कलाकार है परन्तु सेक्स में कमजोर है। इसलिए उसके सारे गुणों को नजर अन्दाज किया जाता है। आज लोग सजग हो गए है। अपनी पत्नी को बदचलन करार देकर पीटनेवालों को लोग कहते है कि, कोर्ट में दावा करो। पीटने का अधिकार किसने दिया। परन्तु यह परिवर्तन बहुत धीमी गति से आ रहा है।

१.३ प्रेम -

आज की युवा पीढी को सबसे अधिक आकर्षित करनेंवाला शब्द है प्रेम। प्रेम नर और नारी के शारीरिक आकर्षण का दूसरा नाम है। प्रेम सिर्फ शारीरिक क्रिया नहीं अपितु शारीरिक लगाव है, साथ-साथ भावनात्मक संवेदना एक दूसरे के प्रति वफादारी, निर्वाह करने की क्षमता भी है। डॉ.

विमलेंन्दु गुप्त ने प्रेम की व्याख्या करते हुए लिखा है **"स्त्री पुरुष के बिच गहरी आसक्ति, जिसमें परस्पर सहानुभूति, निष्ठा, अण्डरस्टेंडिंग, वफादारी हो और इससे भी अधिक एक दूसरे के लिए गहरी संवेदना हो उसे प्रेम कहते है।"** [६] सारोकिन नामक विद्वान प्रेम में वासना के अतिरिक्त अन्य तत्वों को भी महत्व देते है।**"स्त्री पुरुष के आत्मिक,मानसिक,शारीरिक एवं एक दूसरे के पूर्ण व्यक्तित्व सम्बन्धो को प्रेम कहते है।"** [७] पूर्ण प्रेम मनुष्य के जीवन में केन्द्रिय मूल्य रखता है।

अधिकांश लोग यौन आवेग जनित स्त्री-पुरुष के आकर्षण को प्रेम समझते है। सेक्स प्रेम का आवश्यक अंग है परन्तु सर्वेसर्वा नहीं। हैवलॉक एलिस के अनुसार **"प्रेम काम और मित्रता का समन्वय है।"** [८] प्रेम केवल रोमांटिक भ्रम मात्र नहीं है। प्रेम एक सामाजिक घटना है, जो समाज से अनुशासित एवं संचलित है। धर्मवीर भारती ने अपने एक उपन्यास मे लिखा है, **"प्रेम नामक कोई रहस्यमय, अध्यात्मिक या सर्वथा वैयक्तिक भावना न होकर वास्तव में एक मानवीय सामाजिक भावना है, अतः समाज व्यवस्था में अनुशासित होती है।"** [९] कुछ लोग कहते है, प्रेम थेरी नही प्रॅक्टीस है, जितना ज्यादा प्यार करो रिश्ता उतना ही गहरा पैठता है और रिश्ता जितना ही पुराना होता है उसमें रोज उतनी हि ताजगी आती है। प्रेम जीवन का यथार्थ व्यवहार है। काल्पनिक प्रेम,या स्मृतियों में प्रेम की उम्र कम होती है।

इलियट और मेरिल की मान्यता के अनुसार **"रुमानी आकर्षन अपरिचित और दबी हुई यौन भावनाओं के कारण विकसित होता है।"** [१०] मैकाइवर और पेज का कथन है - **"रोमांटिक प्रेम व्यक्ती के पूर्ण व्यक्तित्व के साथ लिंग के समेकन का अन्तर्निहित करता है। युगों से जीवन के महानअनुभव के रुप में इस भाव का विकास होता आया है।"**[११] प्रेमी बडे-बडे वादे करते है। परन्तु जब पूरे नही होते तब यहाँ तक कहते है कि, दोनों साथ-साथ भीख मांगेगे। घर से भाग जाने की योजना बनाते है। जेवर लेकर भाग जाते है, परन्तु यह सब कितने दिनों तक चलेगा। जीवन के यथार्थ की आँच लगने पर सारा प्यार कपूर की तरह उड़ जाता है।

१.४ विवाह –

विवाह की व्याख्या करते हुए लोई का कथन है - **"विवाह यौन सम्बन्धों के नियमन की एक मान्य संस्था रही है जिसका उद्देश्य परिवार बसाना, सन्तानोत्पत्ति एवं समाज की निरन्तरता को बनाए रखना रहा है। प्रत्येक समाज में कतिपय ऐसे नियम अवश्य पाये जाते हैं जो यौन सम्बन्धो के नियमन का आधार बनते हैं। विवाह इन्ही नियमों की अभिव्यक्ति करता है। विवाह स्पष्टतः उन स्विकृत संबंधो को प्रकट करता है जो यौन सन्तुष्टि के पश्चात् भी स्थिर रहता है तथा पारिवारिक जीवन का आधार बनता है।"**[१२] दूसरे विद्वान हैवलॉक एलिस की मान्यता है कि, **"विवाह को कानून या धर्म की स्वीकृती मिली हो या न मिली हो, फिर भी विवाह जीववैज्ञानिक अर्थ में और कुछ हद तक सामाजिक अर्थ में, स्थायित्व आकांक्षा से आपूरित यौन सम्बन्धों की स्थापना है।"**[१३] गिलन के अनुसार **"विवाह एक संस्था है जो पति या पत्नी की लालसा को नियमित और वेध करती है और एक सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक दूसरे पर पूर्ण अधिकार प्रदान करती है। चाहे वह किसी भी**

रुप मे क्यों न हो।"[१४] विवाह केवल यौन सम्बन्धों का नियमन करनेवाली संस्था ही नही है बल्कि सन्तानोत्पत्ति एवं अन्य आर्थिक क्रियाओं को सम्पादन भी अपने माध्यम से करती है। सोरोकिन के अनुसार **"विवाह पूर्ण प्रेम के प्रत्यक्षीकरण व्यक्तित्व के विकास एवं जीवन की परम सन्तुष्टियों की दिशा में एक दृढ कदम है।"**[१५] सारांश विवाह समाज स्वीकृत मान्यता, नियम या कानून के आधार पर दो या अधिक स्त्री-पुरुष को विधिवत मिलानेवाली संस्था है। जो यौन नियमन के साथ-साथ सन्तानोत्पत्ति, घर बसाने एवं आर्थिक सहयोग को दृढ आधार प्रदान करती है।

हिन्दूविवाह एक संस्था है जो धार्मिक कर्तव्यों के पालन हेतु बनायी गयी है। हिन्दु विवाह मूल्य संतानोत्पत्ति है। हिन्दू विवाह की पूर्तता में धार्मिक कृत्यों, होम, पाणिग्रहण, सप्तपदी आदि की पूर्तता को होना आवश्यक था। इतना सब गोत्र, कुंडली, जाति देखने पर भी कालान्तर ने उसमें अनेक समस्याएँ उभर आयी। बाल-विवाह, विधवा-विवाह, वरमूल्य आदी ने हिन्दू विवाह के पावन उद्देश्य को विकृत किया।

शादी समाज की एक ऊंची रस्म है। कारण यह कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं है। दो इकाइयों के सामूहिक जीवन की सामाजिक-स्विकृती का नाम विवाह है। यह सिर्फ दो व्यक्तियों तक सीमित न होकर दो परिवारों का सम्बन्ध है। नयी पीढी के अनुसार विवाह सामाजिक धरातल पर एक व्यक्तिगत मसला है। उसे व्यक्तिगत रुप से हल करना चाहिए। आज विवाह एक समझौता है। जब आपस में यह गुंजाइश नहीं रहेगी कि इसे चलाया जा सके या इसी पर स्थिर रहा जा सके तो यह समझौता टूट जायेगा। नगरों में ७५ प्रतिशत विवाह स्वयं की इच्छा से सम्पन्न होते है। सिर्फ २५ प्रतिशत माता-पिता की इच्छा से। माता-पिता द्वारा किये गये विवाहों में ६ प्रतिशत असफल होते है। जाति के अंर्न्तगत किये गये विवाह ८४ प्रतिशत सफल होते है। महानगरों में विवाहों में जातीय बंधन तोडने के लिए लोग उत्सुक रहते है। नयी पीढी विवाह के टीम-टाम के विरुध्द है। प्रदर्शन के विरुध्द है। दहेज के बारे में भी विरोध ही मिलता है। युवा पीढी का तो मत है कि, एक मृत और दुर्बोध भाषा में कुछ जाहिलों के बीच अर्थहीन वाक्यों को दुहरा देना विवाह नही है। आग की धुंध आती लपटों के चारों ओर बैल की तरह चक्कर काटने से जीवन सफल नही होता।

संदर्भ ग्रंथसुची

१)Elliott and Merri Family Disorganization Social Disorganization -..... पृष्ठ ३४५
२)Elliott and Merri Family Disorganization Social Disorganization -.....पृष्ठ ३४५
३)Elliott and Merri Family Disorganization Social Disorganization - .....पृष्ठ ३५४
४)Elliott and Merri Family Disorganization Social Disorganization - .....पृष्ठ ३४८
५)Elliott and Merri Family Disorganization Social Disorganization - .....पृष्ठ ३५७
६) विमलेन्दु गुप्त - प्रेम विवाह और सेक्स - सा. हिन्दुस्तान - ८/७/७/३.....पृष्ठ. ६
७) Sorokin - Same sex order १९६१..... पृष्ठ १३१
८) Haveloek Ellis - Psychlogy of sex .....पृष्ठ २३५
९) धर्मवीर भारती - सूरज का सातवाँ घोडा .....पृष्ठ २५
१०) Elliott and Merrill - Social Disorganisation.....पृष्ठ ३६४
११) मैकाईवर और पेज- सोसायटी..... पृष्ठ २७५

१२) Lowie -Marriage, Encyclopaedia of social science. vol. x,... पृष्ठ 146
१३) Havelock Ellis - Psychology of Sex.....पृष्ठ 187
१४) J.L. Gillin and other - Social Problems .....पृष्ठ 302
१५) P.A. sorokin - Sane Sex Order .....पृष्ठ 141

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com